

Sh.

काला त्रिपुरा
सहस्र नाम
हंमरी का संदिता

~~17~~
C 17

22 leaves

17
—
438

14.5 x 8.3 cm.

46 p

8

गङ्गा मम दयं गङ्गा मम दयं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 श्री गङ्गा मम दयं गङ्गा मम दयं ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

॥ श्रीः ॥
॥ ३३ ॥

समेभगेष्टमधिकष्टभा ॥ श्रीसङ्कृतवरा ॥ ॥ ॥
विठगरुचमनैदः सज्जिठवेरएयते ॥ लवष्टभि
वृभुइष्टिगलयागमकनग ॥ उवेरवकालमे
वीमिडुयभिउतः ^{मिदम} परभा ॥ उभुः रामभदभूक
षयाभिउवधिये ॥ मगेष्टुधिरभैरुगभीरभेद
विहभागा ॥ उभेरभुवतेमेविष्टयतेरकालमभ

५
+

CC-0. Dogra Art Museum Jammu. Digitized by eGangotri

३६

ॐ सुररुभिन्नगररुभुडिभिमेगिरी॥ डिपराभु
रुगीभेमपवेरिणिगउभा॥ वभाजगकरुडिः
विहडिःमकरुगीमिव॥ मरुद्रभुडिचरुमभारु
ठगेगर॥ परभारुलदगीरडीरुद्रगीरुडिः॥
रुभालरुद्रकलकेलीकैवल्यमकल॥ रभकल्यक
ल्यलउऊरुदलवगीरुडिः॥ विरेममिगुभभिगु

॥ श्रीः ॥
॥ ३७ ॥

भगुभ्रडिद्वैरभ॥ गलककैटिहिरप्रगदुकेटि
 भसीउल॥ भवदीप्रधमिगुल्लीभनगुपरिक
 ल्पिउ॥ करदरयराकउभगतिःभापभउतिः॥
 गणगणेशुगीगल्लीभदेदूकरिकल्पिउ॥ पूपल
 गतिगीमरापूयल्लगतिमउभा॥ सुचाभ्रमृभ
 कसजिःमिंलिकरकउपरा॥ भेमभमगवदोए

पवित्रिउ
 +

भालिपमवरायण॥ सरकेस'इमंभक्तुपालि
इयविगणित॥ गम्भिरिभुवरगानभक्तुएउंभ
मन्त्रिक॥ भिद्युत्तिलकमानपम्भिलभलपु
धिक॥ भक्तुगणभममिडरइभलविक्तुधिड
भवलठगलप्रीडभक्तुसमभरेरभा॥ उभुल
भुलवमरभमररक्तुभरभा॥ भाणगणउपः

भालिक

श्रीः॥
॥८॥

मगरूपपरविणीसुगी॥ वक्रभुललभमद्रुपठ
 भयभेमम॥ विमरमद्रुकेसुगवृंदिउडदऊ
 पिली॥ रुमरीय नउिउटमंकरीप्रीतिभल्लगी॥
 प्रपल्लपंगमीप्रलप्रलपी० विवमिरी॥ गण
 लकीसियलकीभदलकीभगणिक॥ म
 उप्रमीभमभडिमुउकेभमिरेइतिः॥ प

श्रीराम

॥ श्री ॥
॥ ८० ॥

रिप्रल्लगगमुडीविणडीरलवरिरी॥भाच
ठैभरुपमीसुभभएगडिरभिक॥भोर
दीसीउरुभिःभासीकाविगका॥रुद्रभू
वडीरभिकभूणरभभुधिली॥रभभिकुः
भगाडीमप्रभगीभैषवेम॥रिगडरभरभ
ऊमडिडिप्रवरदिक॥कभकाकभरीयम

भ॥

कभेसीठगभङ्गल॥भठगठेगिरीठेष्टठगुः
मठगमठग॥ठगलिङ्गरुक्कलठगभष्ट
दिवभिरि॥ठगकपाठगभयीठगयडठगे
उभा॥येरिएयकभकलकलभउपगय
जलजडलयाभडाणीवडुलिङ्गकपिल्ली॥
भलरियभलकपाभलरुडिभुकपिल्ली॥

क ५

मेङ्गककभलरक्तमिह्वक्कगडिडिव॥मीउरु॥वि
मऊपवेमयेरिपुरिदा॥५॥उकेटिगवगवगवि
विभुड्डिउड्ड॥रमउलीरमेप्रलप्रलअठरुऊ
धिक॥हृष्टगववेमगडिःवमिहभमणपुरिः॥व
लभलमिहिकरालपड्डरुभमभिरि॥अलके
॥मीउरु॥विभुड्डिउड्ड॥रमउलीरमेप्रलप्रलअठरुऊ
॥मीउरु॥विभुड्डिउड्ड॥रमउलीरमेप्रलप्रलअठरुऊ

॥मीः॥
॥५॥

ली

भुव॥ भनभंमभिरुलिपुअउमउमभंरुडिः॥
 भुवदीप्रधभंमिऊरऊलरविवरिरी॥ भगऊप्रिय
 भंमऊमसुऊऊलयुठय॥ मेयःमिडिअप्रुटेकर
 वकेमठलरडी॥ भेउमिरमिरप्रियमाऊगीमा
 भरीविडः॥ अयऊःअप्रियअीयभुकीयलरभा
 अक॥ अगभाअमयभुपिःभगणगपिकपिक॥

॥ श्री ॥
 ॥ ५३ ॥

श्रीः

मिणभरैरषभणदुतिः॥ भुवभिसीपीरगाशीपीर
मेलिपयेरग॥ भग्नकवरीमतामीपिद्विद्विभे
किंक॥ विभारदुतिभापधरलेउभमीपिदिः॥
डिलधुभरभग्नदेभककेलठालिक॥ रिक्केद्वेद्व
वमरगलेद्वभक्तैस्तुल॥ रुदरुल्लारेइमीचिम्भ
रकलमधुमी॥ ठालमदुउपइवभलिभदकिमी

ल
+

॥ श्रीः ॥
॥ ५५ ॥

ली

३

[illegible]

पञ्च
+

भगणी कुलङ्क ॥ गभीर गति शिवली नन्दु गदी भ
 भयभ ॥ गल्लं गी गुल्लि वहु पंहु सुक भुगी रिक ॥ भे
 नगली रिउ भु गल सुदि म य ग्र य क ॥ भए उ अ
 मर भउ भय लङ्क यु य त्रिउ ॥ गुरु गुल्ल भ सु भु ल
 अलि उ पु ग भ दिउ ॥ ये गि ऐ य प म सु सु भे म भ
 भउ भ रि ली ॥ ल व ए भि नु भि उ ग ति ल क क रि क

इण
 +
 ॥ श्री ॥
 ॥ २२ ॥

वि
 लालक ॥ भप्रभिष्टमवणमवण वरुकरकेमय ॥
 ठालककिगल्लमेलीमेलीसीप्रेभकभप्रका ॥ रभा
 गभ्ठीरभरभीपद्मिरीरभभरभा ॥ प्रभत्रभत्रवाम
 मरमठविठयम ॥ रंराणप्रियविष्टरष्टरडकर
 डरी ॥ विमिडयडमिडडविष्टवल्लीगतिः सुठ ॥ ऊ
 एरऊएऊएऊपडऊएमपडभी ॥ मडऊएडिऊ

कु

एह धरु एवे ल प्रलित ॥ कृ ए धे न धं मं पत्र उगी या
 परम कल ॥ धे न धी म उ य उ ल भी सु गी मे न म ल
 ल ॥ धे न धा ल दि व ल म रि म र म अ क धि ली ॥ व ल
 जी उ व ल म उ म व र द म उ भा ण ॥ गै उ व ली कृ
 ए न क मे सी अ प व ल ठ ॥ अ प व ती रै ण क गी ए र ति
 ए ग र म य ॥ म प म य म प धि सु उ दू म जि सु म

॥ श्रीः ॥
 ॥ ॐ ॥

एवी॥ लेपभद्रकभगल्लोभनवीविडपाविड॥ म
 कभुगीरत्रिविष्टुठभुविष्टुउभालिरी॥ मदेष्टुभ
 नभभडिडुचभभुविडामुडिः॥ मएकेष्टुगडिभ
 प्रीभलठमिष्टिकठग॥ परइयेसीपरठिष्टुविम
 इमिमेवड॥ पष्टिविष्टुदगीकुडिचिगुप्रप्रिडभ
 पुक॥ दिरष्टभडगल्लपागुदभयविडभिसी॥ म

क

॥ श्रीः ॥
॥ ५१ ॥

चभीभतिरीभेकमकमीक्षितभाक ॥ भाकभु
मिहभाउभाएकेदुभरिगभा ॥ येवरेममिरीउल्लभ
मूलभक्तभक्तग ॥ यमरुतेदलरतीरुभल्लले
पर ॥ रुभल्लममिःमिणमिणदिष्टुतिभक्त।
मी ॥ मिणदिष्टुभउधुभेगठेयीरभक्तग ॥ भग
ठीकभप्रकाष्टकभरीयभउदुगिः ॥ रक्षिरीलक्ष

वडी वभिष्ठा लयमेवडा ॥ गेलैक मेवैलैक मीचैकै
 कथरिथालिक ॥ दविचारीमेवभाडाव/डागकव
 रात्रयका ॥ मइयडी ठइभाडा भऐमगठविदाडि:
 मदिप्रयण्णमंभुडि: भुठलाणीरवमिरी ॥ क्षीरप्रल
 लवगडि: भावेवि: भुलिमरा ॥ रभत्रगभमेष्ट
 गभभत्रालयय सुगा ॥ भर्मिगिइइइपराभभु
 ग

ॐ नमो

ॐ५३५

च

॥ श्रीः ॥

॥ ५३ ॥

रीभुरवकुल ॥ गणभुल गणयुक्त गंणिक रङ्गभलि
क ॥ रक्तधिया भगता मगति रङ्गभुक्त धिली ॥ गणः
सुश्रुतिक विष्णु कुत्र भुगति म्बद ॥ दवठवक
भकेलिः भगभुगणी विक ॥ मभगिक्त मभरक्त
भयक्तः कुभभधिया ॥ भयक्त भूतिभउ भूभयक्त
रिक्त कउ ठडा ॥ मभगिः कुभभरक्त भयक्तः

भमभिया ॥ भयभुभुमजिः पटिः गतिभचभुपीणि
क ॥ अट्टभभिकडतीविमयुभीतिपुंरिणक ॥ ऊ
लिकयउतिलयः ठगपीणठिरभिसी ॥ भुलक
प्रभभुयभचलकललदिता ॥ ररलडुभ
ठगायेमगलभरातिता ॥ अचडिकेलयउभु
रलकभेसुगीउषा ॥ गप्रडककुलएकलक्रीपै

ये

वमभुजी॥ वमभुमभवभीउ श्रीतिः ऊमठगरुड॥ क
 लणरभाणभुच प मठहि कलरुडी॥ पधुंधिय प्रि
 यडिस्त्रैवगतिकरीभरोम॥ मरमेममिसीस्त्रैव वै
 मेरुसीपावलीकल॥ मेधिल्लीवमिसीगणचट्ट ट
 उमठगउषा॥ प्रधवमममभगरुडिः श्रीतिच
 डिमुषा॥ उडिमेभूमगीमेवघंमुमलसिकुड

॥ श्रीः ॥
 ॥ ५७ ॥

भङ्गले

षा॥समिरीमैवधुक्कयभभुलरमरेमया॥उ
धुगभउप्रलमठगयउरिरुभिरु॥लिङ्गयइ
लयमभुऊपभंयेगयेगिरु॥इविलीगीणऊप
ममऊतुभाएकप्रिया॥गणगीणभयीगणुभाए
मवंछिउपूम॥गणःभंवीदमजिमुमुविविचिरे ३
ऊधिली॥भवभागीभवभयीमिवमजिभयीप

॥ श्रीः ॥
॥ २० ॥

ॐ ॥ भंयेग ररु रिलय भंयेग श्रीतिभाद्रक ॥ भंये
गऊ भभ ररु भंयेग येग वरिरी ॥ भंयेग भापम
रभ्र मिम ररु कभेविउ ॥ भ्ररु प्रणक भभ्र डि
ररु म मिभ्र कृपिल्ली ॥ भभ्र भ्र पग श्रीउ प्रिय
भभ्र भ्र डिरी ॥ ह्ररु उगी ह्ररु गभ्र ह्ररु येरिः मि
रलय ॥ मिहल ह्ररु भकल भकल भकल

कविः॥ कलामुद्रय पद्मिनि उभयपरादिक॥
 दंभकेलीकुलीशुद्ध दंभद्वयविकमिरी॥ विरग
 उभेदाकलपराभादकलरती॥ विष्टकलउभ
 ममुद्रयकलरती॥ विष्टभउपशुभिः परावृद्ध
 प्रकमिक॥ पराभादपरावमुलीरमजिमउधुयी॥
 मउतिउपकराष्टुभिः परावृद्धककलपमृती

ल

३५
भदेमया॥ अरु ठिधिजगणम्रीः कडियेउरभक
मभइभुजमलमेठरभभुयडुणीविक॥ विणय
येगिरीयइपरभैटविभडिरी॥ प्रलमिडैधिली
विडविडभल्लयमालिरी॥ ठङ्गगभिकुडगडगड
मेटपिबभिसी॥ भदिधीगणठेयगालिकगल
ठेगकड॥ करिलीवदकयेष्टभल्लभेरपमडिक

॥ श्रीः ॥
॥ २३ ॥

मैटु मेल्नी मेदरा पडक प्रणव भिरी ॥ अमुड माभि
क माभु प्रणपलम भुतिः ॥ भगतिः प्रणरा मागर
एकदपराय ॥ बुद्ध काइ भयी भिभुदतु दभिरी
भितिः ॥ येरेदिउ भिय भुप्री बुद्ध लीयल्लु भुतिः ॥
भेभपरा प्रीउय एरा पुषा कभा ॥ भुतिरुदपरा
मभभुएतिः भुतंगतिः ॥ गायत्री ममणिष्टे रमीक

६

७

मन्त्रेयउद्यत् ॥ गङ्गां श्रीगिरिः विभुव भवविभुलीविक
रुधिः वलिष्टुतिभुवद्विणीभुजभीमिक ॥ उत्तर
गभुभुभगभरेभरपरयत् ॥ सुद्विभुगतिः कद्र
करीकेडकप्रणिता ॥ गङ्गां श्रीगङ्गां गङ्गां लभुभी
कलभयी ॥ भुवत्तुगङ्गां गङ्गां भवत्तुगङ्गां भवत्तुगङ्गां
भुवत्तुगङ्गां भवत्तुगङ्गां भवत्तुगङ्गां भवत्तुगङ्गां

॥ श्रीः ॥
॥ ५३ ॥

ऊलभरुगी॥विटरीलपडकमविणयभवमडल
इलभलविमिइमभदइयभरुगी॥गुनकरु
पागुनःभूकमरुवरुषिरी॥मिवरुवरुषकपम
इवरुभूकधिली॥मेवरुवरुभयीकेलेमरु
रुषिरी॥मुक्तमेवरुवरुषकलेमरुवरुषिरी॥
मिष्टेयगुनकपमभयवरुवरुषिरी॥क्तिरु

॥ श्रीः ॥
॥ ५५ ॥

रक्तकपाममभयरक्तविरी॥ वेसरक्तवमयीभ
दरक्तविरी॥ भिक्षुपागुदकपाममपागुद
कपिली॥ गगरक्तवमविश्वरक्तभुविरी॥
विमलरक्तवमममरक्तविरी॥ कवरदु
मलीलदुक्तवमविरी॥ भुक्तवम
पात्रियदुक्तविरी॥ भक्तवमपागुदमेधुप

म्रीः

गमेधियुनप्रठ॥ पापुहपुगेसुजिः भुगुगेकीडरप्रि
य॥ ईलेरुभेकराष्टाभचमपरिप्रिक॥ भ
चमहेठिरीप्रचभयेप्रुषिउठैगवी॥ मिरमजि
मिरमजिमिरमरुइयलय॥ भचमेठगुम्राष्ट
मभचजभरिकठय॥ भचगदकग्राष्टममदि
भ्रयमेवडा॥ भयेममरुमिलयपमिभ्रभ्रय

॥ श्री ॥
॥ २२ ॥

यमेवत ॥ रवमरुतवभ केवेरायमेवत ॥ विद्य
मरुतवभभयेभिंदभरेसुमी ॥ श्रीविद्यमभ
दलक्षीः लक्ष्मीञ्जि इयदिक ॥ भवभभृष्टल
क्षीसुपंमलक्षीतिविमूढ ॥ श्रीविद्यमभृष्टि
परिष्कलमभृष्टी ॥ भृष्टकपष्टकेसीमश्रीवि
द्युद्विगुडव ॥ परिष्टे सुमीमेवदिक्रुष्टपंमभ

^{ल्य}
 लगा ॥ पंगकडलतायमम्रीविष्ट भलपीनी ॥
 भणम्रीगमलसरमात्रप्रलमकभयका ॥ म्रीवि
 ष्टभिक्षुलक्षीसुभाउझीकुवरेसुगी ॥ वरादीपंग
 रडराभीसुगीतिभूकीडिता ॥ परष्टेतिक्केसकपा
 जेकवीमचरारता ॥ परिडः सुभिरंमक्तिमचरा
 गविठिभुयका ॥ वदमचरकपागमिवमचरकपिली ॥

विष्णुमन्त्ररूपमभ्युपगच्छन्निवमिरी॥भोगमन्त्ररूप
 भित्तिमन्त्ररूपमभ्युपगच्छन्निवमिरी॥भोगमन्त्ररूप
 मन्त्रगी॥उद्भवमन्त्ररूपमभ्युपगच्छन्निवमिरी॥भ
 चेयमन्त्ररूपमभ्युपगच्छन्निवमिरी॥भोगमन्त्ररूप
 उद्भवमन्त्ररूपमभ्युपगच्छन्निवमिरी॥भोगमन्त्ररूप
 मन्त्ररूपमभ्युपगच्छन्निवमिरी॥भोगमन्त्ररूप

॥ श्रीः ॥
 ॥ ५० ॥

स्त्रिभेउरमेवडा॥ प्रचक्रभदिभेमिहपस्त्रिभस
रमेवडा॥ रमिहवयकेलआप्रकभेमरकेल
गा॥ मयिकेलभितभक्तिगिहरेचउवमिसी॥
प्रप्रिभिदिगपःप्रप्रकभेचविलभिसी॥ र
द्रीभदेप्रमीमेवकेभगवैप्रुवीउषा॥ वगहै
म्रीगमभममदलद्रीशिमंगतिः॥ दीठि

^{ली}नीइ वि^{ली}नीभइ कछेअ मरकगि^{ली}॥ भदइ मापे
 मगै मगीराष्ट येरिभइक॥ भवामथरमरअ
 कदभिइकगीउषा॥ कंकंछिलिकमडिउहु
 कछल^{ली}ऊपिली॥ मदइरकछिनीममअकछ
 ल^{ली}ऊपिली॥ भवकछल^{ली}ऊपामऊपकछल^{ली}ऊ
 पिली॥ रभकछल^{ली}ऊपामगइकछल^{ली}ऊपिली

॥ श्रीः ॥
 ॥ ५१ ॥

मिडकछलकूपामपैदकछलकूपिली॥अष्टक
छलकूपामगीएकछलकूपिली॥अष्टकछि
लीमैवअष्टकछलकूपिली॥मगीकछिली
मेवीपुद्गकछलकूपिली॥वेदमभामंपत्रभू
वद्यीप्रधमभक्ति॥इपुगेमीभिदुक्तकलम
लविरभिवी॥भवमहेठमरेमीमक्तिपुत्र

श्रीः

म॥ परमं भवमसि ररु कटिभेपल॥ परमं भव
वरु भवमरु उरु धिली॥ परमं गेपग ररु वेग ररु
कमठिप॥ परमं भलिरीमसि ररु वनमिगविता॥
वभुप इरु उवम श्रीमडिपु रभुगी॥ भवमभूण
भापम भवमोठ गुमे सुगी॥ भवमये सुगी भवमोठ
रुगी उषा॥ भवविश्विली भव कवलिध भूकमिरी

॥ श्रीः ॥
१३

भवद्रुमसजिष्ठमचमभेदरीउषा॥ भवभुभर
 सजिष्ठमचष्टुभरकरिल्ल॥ भववष्टुकीसजिःभ
 चभचउरुद्ररी॥ भवेद्रुमसजिष्ठमचद्रुभाएक
 उषा॥ भवभभडिमसजिः भवभइभयीउषा॥ भ
 चद्रुद्रुयकगीभिद्रिष्टिपुभद्रुगी॥ भचद्रुभाए
 केसीमभचकद्रुभिद्रिष्टि॥ मद्रुममद्रुमीक

वभिरी

लय गमभमचिउ ॥ भवभिद्रिप्रममेवीभवभमद्रु
 मउषा ॥ भवप्रियद्रुमीमक्तिः भवभद्रलकरिली ॥
 भवकमप्रप्रलम भवमल्लप्रमेमिरी ॥ भवभद्रप्रम
 मरीभवविप्रविरमिरी ॥ भवभद्रमरीमेवीभवभे
 ठप्रमयिरी ॥ दिप्रोमीभवभिद्रिप्रमममकेलगा
 भवगङ्गाकोमीप्रविगङ्गायेमिरीउषा ॥ भवप्रम

॥ श्रीः ॥
 ॥ १७ ॥

यीमेवीभवहणिविरमिरी॥ भवणभुक्तपाम
चपपदगउषा॥ भववृभयीमेवीभवगभुक्त
धिल्ली॥ भदिभमजिमेवीममेवीभवमभुक्ति
भउरुमगमरेमीमेवीदिपरभालिरी॥ भवगेगद
रेमीमगदभुयेगिरीउषा॥ वग्रेवीवमिरीमेवमेवी
कभेभगीउषा॥ मेमिरीविभलमेवभमलणयि

॥ श्रीः ॥
॥ ७ ॥

सीउषा ॥ भवेत्तुगीकेलिरीमदुष्टमचभिदिम् ॥ भ
चकभभ्रमेसीमपगपगदभृविग ॥ इकेलमदु
भ्रमभचैसुदयुणदिक ॥ कभेसुगीरल्लुपकभे
सीमपकपिल्ली ॥ कभेसीपमकपमकभेसुदभृ
पिल्ली ॥ कभेसुगीमसजिभृमयिमरुठगलय ॥ क
भगिदरिमेवीमइकेलभृयकेलग ॥ सदिकेल

॥ श्रीः ॥
॥ ७ ॥

रीउषा ॥ भवेसुगीकेलिरीगदुधुगभवभिद्रिमा ॥ भ
चकभभमेसीगपगपगदभविग ॥ इकेलमदुर
भुगभचैसुदगुणद्रिक ॥ कभेसुगीगल्लुयकभे
सीगपद्रुपिल्ली ॥ कभेसीपमद्रुयगकभेसुदभुद्रु
पिल्ली ॥ कभेसुगीद्रुमजिद्रुप्रथिमरुद्रुलय ॥ क
भगिदरिमेवीगइकेलभद्रुकेलग ॥ मद्रिकेल

